



Hitarth

16 Oct 2025

09:45 AM

Surat

Model: Web-MyKundli

Order No: 120308001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 16/10/2025
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 09:45:00 घंटे
इष्ट _____: 07:55:26 घटी
स्थान _____: Surat
राज्य _____: Gujarat
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:10:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:06:20 घंटे
वेलान्तर _____: 00:14:28 घंटे
साम्पातिक काल _____: 10:46:06 घंटे
सूर्योदय _____: 06:34:49 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:13:25 घंटे
दिनमान _____: 11:38:36 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 28:50:31 कन्या
लग्न के अंश _____: 10:39:30 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: आश्लेषा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: शुभ
करण _____: विष्टि
गण _____: राक्षस
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डो-डोभाल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	आश्विन	24
पंजाबी	संवत : 2082	आश्विन	31
बंगाली	सन् : 1432	आश्विन	29
तमिल	संवत : 2082	पुरुटासी	30
केरल	कोल्लम : 1201	कन्नी	30
नेपाली	संवत : 2082	आश्विन	30
चैत्रादि	संवत : 2082	कार्तिक	कृष्ण 10
कार्तिकादि	संवत : 2082	आश्विन	कृष्ण 10

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
तिथि समाप्ति काल _____ : 10:35:51
जन्म तिथि _____ : 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 12:42:02 घंटे
जन्म योग _____ : आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग _____ : शुभ
योग समाप्ति काल _____ : 26:10:22 घंटे
जन्म योग _____ : शुभ
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 10:35:51 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 54:22:56
भभोग _____ : 61:45:31
भोग्य दशा काल _____ : बुध 2 वर्ष 0 मा 3 दि

घात चक्र

मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

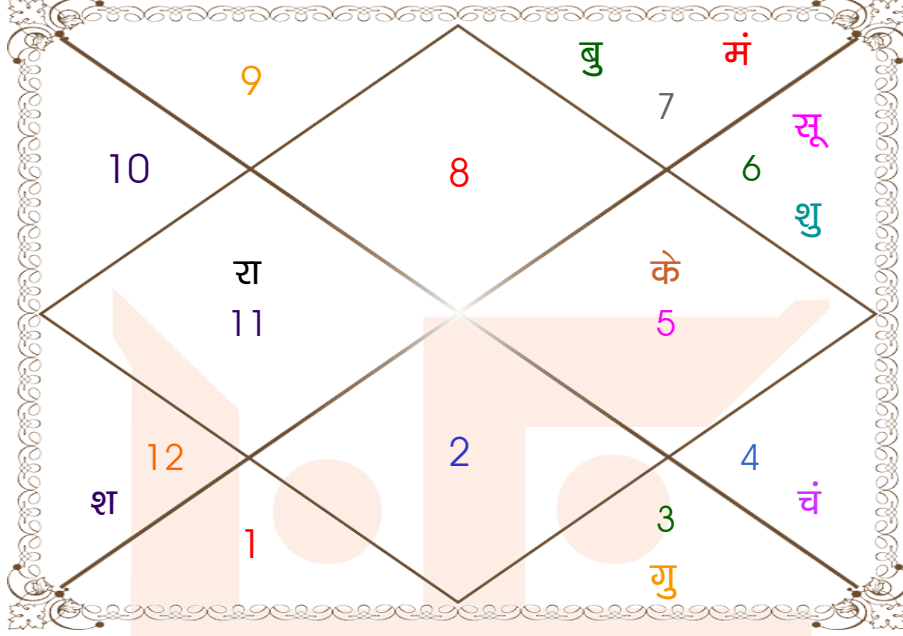
D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

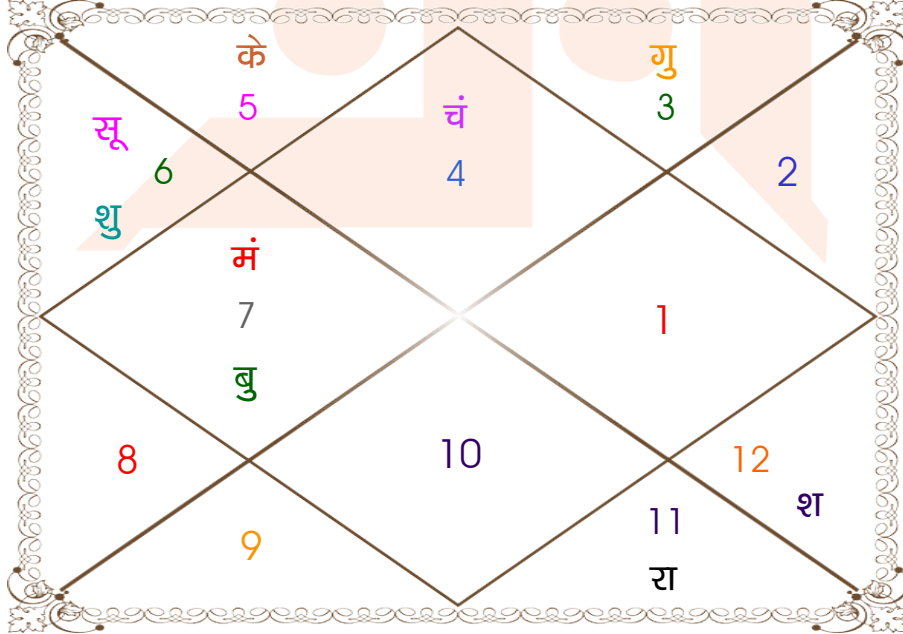
Vibhaasharma.av@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श			गु
रा			चं
			के
	ल	बु मं	शु सू

लग्न कुंडली

गु		श
चं		रा
के		
सू शु	मं बु	ल

विंशोत्तरी
बुध 2वर्ष 0मा 3दि
बुध

16/10/2025

21/10/2130

बुध	20/10/2027
केतु	20/10/2034
शुक्र	20/10/2054
सूर्य	19/10/2060
चन्द्र	20/10/2070
मंगल	19/10/2077
राहु	20/10/2095
गुरु	21/10/2111
शनि	21/10/2130

योगिनी

भामरी 0वर्ष 5मा 20दि
भामरी

16/10/2025

07/04/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	16/10/2025
पिंगला	06/12/2025
धान्या	07/04/2026

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

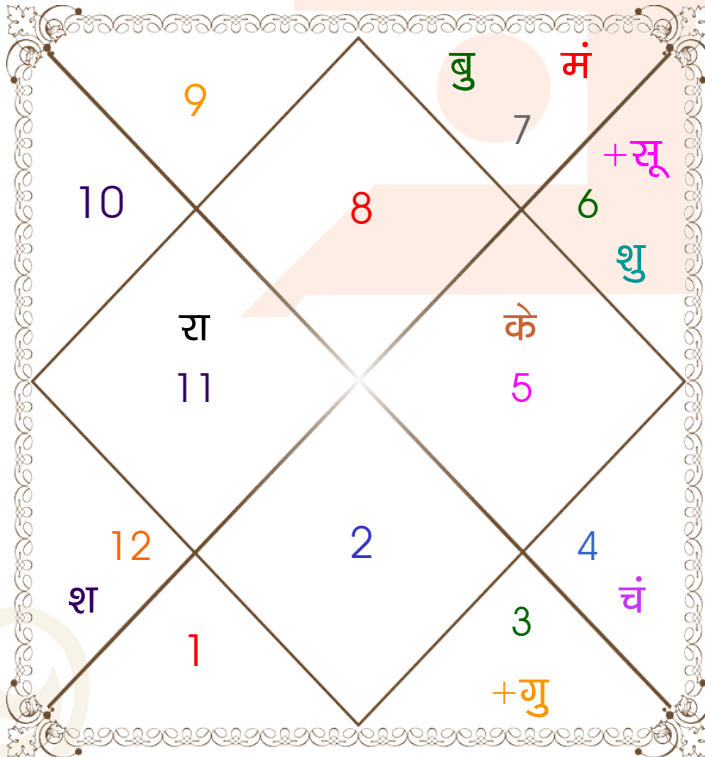
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न	वृश्चि	10:39:30	317:52:06	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	---
सूर्य	कन्या	28:50:31	00:59:30	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	सम राशि
चंद्र	कर्क	28:25:26	12:50:17	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	स्वराशि
मंगल	तुला	22:05:53	00:41:48	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	सम राशि
बुध	तुला	19:28:07	01:22:27	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	मित्र राशि
गुरु	मिथु	29:48:30	00:04:58	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि
शुक्र	कन्या	08:37:26	01:14:32	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	नीच राशि
शनि	व मीन	02:27:42	00:03:54	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु	कुंभ	23:43:51	00:01:39	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु	सिंह	23:43:51	00:01:39	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व वृष	06:36:20	00:01:49	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	---
नेप	व मीन	05:55:57	00:01:30	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो	मक	07:08:59	00:00:03	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव	सिंह	15:46:19	--	पू०फाल्गुनी	--	11	सूर्य	शुक्र	सूर्य	--

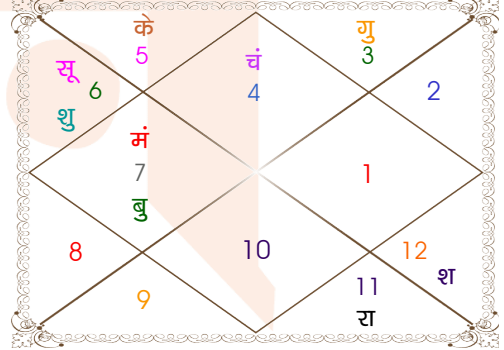
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:06

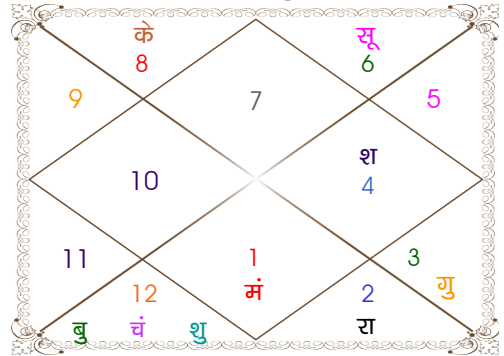
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 26:30:38	वृश्चिक 10:39:30
2	वृश्चिक 26:30:38	धनु 12:21:46
3	धनु 28:12:55	मकर 14:04:03
4	मकर 29:55:11	कुम्भ 15:46:19
5	कुम्भ 29:55:11	मीन 14:04:03
6	मीन 28:12:55	मेष 12:21:46
7	मेष 26:30:38	वृष 10:39:30
8	वृष 26:30:38	मिथुन 12:21:46
9	मिथुन 28:12:55	कर्क 14:04:03
10	कर्क 29:55:11	सिंह 15:46:19
11	सिंह 29:55:11	कन्या 14:04:03
12	कन्या 28:12:55	तुला 12:21:46

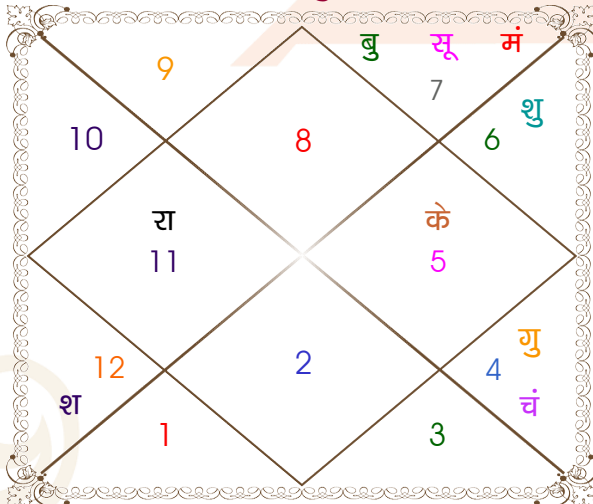
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	10:39:30
2	धनु	10:28:13
3	मकर	12:25:09
4	कुम्भ	15:46:19
5	मीन	17:39:15
6	मेष	15:47:44
7	वृष	10:39:30
8	मिथुन	10:28:13
9	कर्क	12:25:09
10	सिंह	15:46:19
11	कन्या	17:39:15
12	तुला	15:47:44

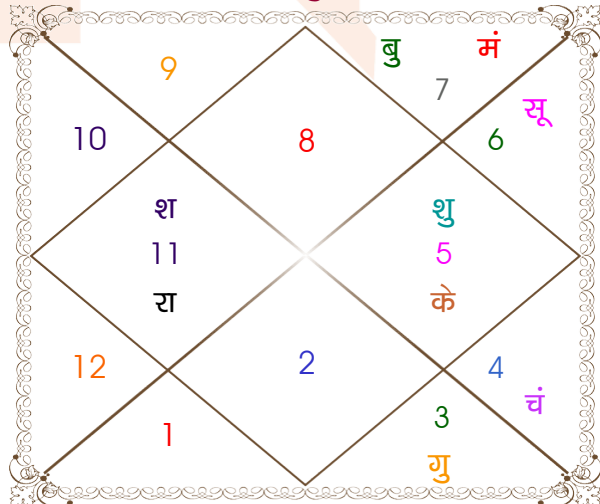
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 2 वर्ष 0 मास 3 दिन

बुध 17 वर्ष 16/10/2025 20/10/2027	केतु 7 वर्ष 20/10/2027 20/10/2034	शुक्र 20 वर्ष 20/10/2034 20/10/2054	सूर्य 6 वर्ष 20/10/2054 19/10/2060	चंद्र 10 वर्ष 19/10/2060 20/10/2070
00/00/0000	केतु 17/03/2028	शुक्र 18/02/2038	सूर्य 06/02/2055	चंद्र 20/08/2061
00/00/0000	शुक्र 17/05/2029	सूर्य 18/02/2039	चंद्र 08/08/2055	मंगल 21/03/2062
00/00/0000	सूर्य 22/09/2029	चंद्र 19/10/2040	मंगल 14/12/2055	राहु 20/09/2063
00/00/0000	चंद्र 23/04/2030	मंगल 19/12/2041	राहु 06/11/2056	गुरु 19/01/2065
00/00/0000	मंगल 19/09/2030	राहु 19/12/2044	गुरु 26/08/2057	शनि 20/08/2066
00/00/0000	राहु 08/10/2031	गुरु 20/08/2047	शनि 08/08/2058	बुध 19/01/2068
00/00/0000	गुरु 13/09/2032	शनि 20/10/2050	बुध 14/06/2059	केतु 19/08/2068
16/10/2025	शनि 22/10/2033	बुध 20/08/2053	केतु 20/10/2059	शुक्र 20/04/2070
शनि 20/10/2027	बुध 20/10/2034	केतु 20/10/2054	शुक्र 19/10/2060	सूर्य 20/10/2070
मंगल 7 वर्ष 20/10/2070 19/10/2077	राहु 18 वर्ष 19/10/2077 20/10/2095	गुरु 16 वर्ष 20/10/2095 21/10/2111	शनि 19 वर्ष 21/10/2111 21/10/2130	बुध 17 वर्ष 21/10/2130 17/10/2145
मंगल 18/03/2071	राहु 02/07/2080	गुरु 07/12/2097	शनि 24/10/2114	बुध 18/03/2133
राहु 04/04/2072	गुरु 25/11/2082	शनि 20/06/2100	बुध 03/07/2117	केतु 16/03/2134
गुरु 11/03/2073	शनि 01/10/2085	बुध 26/09/2102	केतु 12/08/2118	शुक्र 13/01/2137
शनि 20/04/2074	बुध 20/04/2088	केतु 02/09/2103	शुक्र 11/10/2121	सूर्य 20/11/2137
बुध 17/04/2075	केतु 08/05/2089	शुक्र 03/05/2106	सूर्य 23/09/2122	चंद्र 21/04/2139
केतु 13/09/2075	शुक्र 08/05/2092	सूर्य 19/02/2107	चंद्र 24/04/2124	मंगल 18/04/2140
शुक्र 13/11/2076	सूर्य 02/04/2093	चंद्र 20/06/2108	मंगल 02/06/2125	राहु 05/11/2142
सूर्य 20/03/2077	चंद्र 01/10/2094	मंगल 27/05/2109	राहु 08/04/2128	गुरु 10/02/2145
चंद्र 19/10/2077	मंगल 20/10/2095	राहु 21/10/2111	गुरु 21/10/2130	शनि 17/10/2145

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 2 वर्ष 0 मा 11 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि 16/10/2025 20/10/2027	केतु - केतु 20/10/2027 17/03/2028	केतु - शुक्र 17/03/2028 17/05/2029	केतु - सूर्य 17/05/2029 22/09/2029	केतु - चंद्र 22/09/2029 23/04/2030
16/10/2025	केतु 29/10/2027	शुक्र 27/05/2028	सूर्य 24/05/2029	चंद्र 10/10/2029
बुध 01/12/2025	शुक्र 22/11/2027	सूर्य 17/06/2028	चंद्र 03/06/2029	मंगल 22/10/2029
केतु 27/01/2026	सूर्य 30/11/2027	चंद्र 23/07/2028	मंगल 11/06/2029	राहु 23/11/2029
शुक्र 10/07/2026	चंद्र 12/12/2027	मंगल 17/08/2028	राहु 30/06/2029	गुरु 22/12/2029
सूर्य 28/08/2026	मंगल 21/12/2027	राहु 20/10/2028	गुरु 17/07/2029	शनि 24/01/2030
चंद्र 18/11/2026	राहु 12/01/2028	गुरु 16/12/2028	शनि 06/08/2029	बुध 24/02/2030
मंगल 14/01/2027	गुरु 01/02/2028	शनि 21/02/2029	बुध 24/08/2029	केतु 08/03/2030
राहु 11/06/2027	शनि 25/02/2028	बुध 22/04/2029	केतु 01/09/2029	शुक्र 12/04/2030
गुरु 20/10/2027	बुध 17/03/2028	केतु 17/05/2029	शुक्र 22/09/2029	सूर्य 23/04/2030
केतु - मंगल 23/04/2030 19/09/2030	केतु - राहु 19/09/2030 08/10/2031	केतु - गुरु 08/10/2031 13/09/2032	केतु - शनि 13/09/2032 22/10/2033	केतु - बुध 22/10/2033 20/10/2034
मंगल 02/05/2030	राहु 16/11/2030	गुरु 22/11/2031	शनि 16/11/2032	बुध 13/12/2033
राहु 24/05/2030	गुरु 06/01/2031	शनि 15/01/2032	बुध 12/01/2033	केतु 03/01/2034
गुरु 13/06/2030	शनि 08/03/2031	बुध 03/03/2032	केतु 05/02/2033	शुक्र 04/03/2034
शनि 07/07/2030	बुध 01/05/2031	केतु 23/03/2032	शुक्र 13/04/2033	सूर्य 22/03/2034
बुध 28/07/2030	केतु 23/05/2031	शुक्र 19/05/2032	सूर्य 03/05/2033	चंद्र 22/04/2034
केतु 06/08/2030	शुक्र 26/07/2031	सूर्य 05/06/2032	चंद्र 06/06/2033	मंगल 13/05/2034
शुक्र 30/08/2030	सूर्य 14/08/2031	चंद्र 04/07/2032	मंगल 30/06/2033	राहु 06/07/2034
सूर्य 07/09/2030	चंद्र 15/09/2031	मंगल 24/07/2032	राहु 30/08/2033	गुरु 23/08/2034
चंद्र 19/09/2030	मंगल 08/10/2031	राहु 13/09/2032	गुरु 22/10/2033	शनि 20/10/2034
शुक्र - शुक्र 20/10/2034 18/02/2038	शुक्र - सूर्य 18/02/2038 18/02/2039	शुक्र - चंद्र 18/02/2039 19/10/2040	शुक्र - मंगल 19/10/2040 19/12/2041	शुक्र - राहु 19/12/2041 19/12/2044
शुक्र 11/05/2035	सूर्य 08/03/2038	चंद्र 10/04/2039	मंगल 13/11/2040	राहु 02/06/2042
सूर्य 10/07/2035	चंद्र 08/04/2038	मंगल 16/05/2039	राहु 16/01/2041	गुरु 26/10/2042
चंद्र 20/10/2035	मंगल 29/04/2038	राहु 15/08/2039	गुरु 14/03/2041	शनि 17/04/2043
मंगल 30/12/2035	राहु 23/06/2038	गुरु 04/11/2039	शनि 20/05/2041	बुध 20/09/2043
राहु 30/06/2036	गुरु 11/08/2038	शनि 09/02/2040	बुध 20/07/2041	केतु 22/11/2043
गुरु 09/12/2036	शनि 08/10/2038	बुध 05/05/2040	केतु 13/08/2041	शुक्र 23/05/2044
शनि 20/06/2037	बुध 28/11/2038	केतु 09/06/2040	शुक्र 23/10/2041	सूर्य 17/07/2044
बुध 09/12/2037	केतु 20/12/2038	शुक्र 19/09/2040	सूर्य 14/11/2041	चंद्र 16/10/2044
केतु 18/02/2038	शुक्र 18/02/2039	सूर्य 19/10/2040	चंद्र 19/12/2041	मंगल 19/12/2044

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

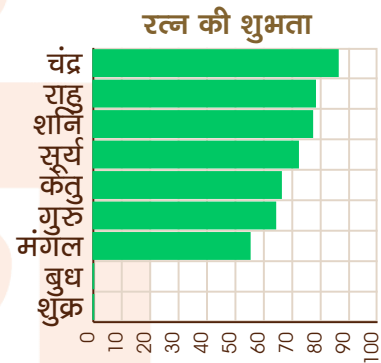
मूलांक	7
भाग्यांक	8
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5,
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	86%	भाग्योदय
गोमेद	राहु	78%	सुख, सन्तति सुख
नीलम	शनि	77%	सन्तति सुख, पराक्रम, सुख
माणिक्य	सूर्य	72%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	66%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
पुखराज	गुरु	64%	दुर्घटना से बचाव, धन, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	55%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	0%	व्यय, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	20/10/2027	78%	73%	55%	3%	64%	9%	77%	78%	66%
केतु	20/10/2034	59%	73%	61%	0%	64%	9%	64%	66%	78%
शुक्र	20/10/2054	59%	73%	55%	0%	64%	22%	83%	84%	72%
सूर्य	19/10/2060	84%	92%	61%	0%	70%	0%	64%	66%	53%
चंद्र	20/10/2070	78%	98%	55%	0%	64%	0%	77%	66%	53%
मंगल	19/10/2077	78%	92%	67%	0%	70%	0%	77%	66%	72%
राहु	20/10/2095	59%	73%	34%	0%	64%	9%	83%	91%	53%
गुरु	21/10/2111	78%	92%	61%	0%	77%	0%	77%	78%	66%
शनि	21/10/2130	59%	73%	34%	0%	64%	9%	89%	84%	53%

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/02/2111-02/05/2113	22/09/2113-26/01/2114	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
सम
सम
सम
शुभ

क्षेत्र

दुर्घटना से बचाव
बदनामी
व्यावसायिक परेशानी
कम खर्च
सुख

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी। सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगे।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में आप

उन्नतिशील रहेंगे। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। यदा कदा पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरे से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी,

वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान्, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(16/10/2025 - 20/10/2027)

बुध की महादशा 16/10/2025 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 20/10/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध बारहवें भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा थी। शनि के कारण आपका कुछ अप्रत्यक्षित परिवर्तन, साझेदारी में नुकसान तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मामूली समस्या हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका व्यय होगा, शत्रुओं पर विजय तथा विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बुध की अपनी ही राशि में स्थिति के कारण आपको कोई गंभीर या बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु, विषाणुजन्य बुखार, संक्रामक बीमारी, आँखों तथा पैरों में पीड़ा, चर्मरोग तथा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको दूर स्थानों से लाभ होगा, किन्तु व्यय भी होगा। इसलिए अर्थ की उचित व्यवस्था आवश्यक है। आपको अपनी माता से कुछ लाभ हो सकता है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, अस्पताल का कार्य या अन्य दातव्य संस्थाओं, विमान-विज्ञान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर, हाथ के बने सामान यादि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की यात्रा, व्यवसाय-व्यापार में सफलता तथा सहयोगियों से सहयोग मिलेगा। आपके सम्मान में उन्नति होगी और आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों की यात्रा, धन तथा कठिन श्रम से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। विदेश से कारोबार, विरोधियों पर विजय तथा व्यापार की उन्नति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको सुख तथा वाहन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन-देन भी हो सकता है। आप जमीन-जायदाद खरीद या बेच सकते हैं। किन्तु बुध की अन्तर्दशा में सावधानी बरतें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और दूर की यात्राएं हो सकती हैं।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ शुभ परिवर्तन हो सकता है। इस दशा के दौरान आप कुछ शोध-परियोजनाएं आरम्भ कर सकते हैं। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यवसाय और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है।

परिवार :

आपका परिवार के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्याएं, शत्रुओं पर विजय तथा कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल हो सकती है। जीवन साथी के साथ संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता को समृद्धि तथा पिजा को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जीवन वृत्ति सफल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपकी अध्यात्म में रुचि होगी और दान-पुण्य तथा शुभ कार्यों पर व्यय करेंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यय और यात्रा होगी और रोजगार के अवसर मिलेंगे। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में सुख तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा आनन्द की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल की अन्तर्दशा में शक्ति और अधिकार, जीविकापार्जन में सफलता तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा में समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ नुकसान तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं होंगी।

**महादशा :- केतु
(20/10/2027 - 20/10/2034)**

केतु की महादशा 20/10/2027 को आरम्भ और 20/10/2034 को समाप्त होगी।
इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु दशम भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, विरोधियों पर विजय तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको यश और ख्याति मिलेगी और जीवन में प्रगति तथा लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप खुश और आशावादी होंगे। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी तथा विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, हृदय-पीड़ा, निचले अंगों में पीड़ा बुखार फोड़ा तथा अल्सर आदि हो सकते हैं। समय पर उपाय करने से इनसे

बचाव हो सकता है।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। व्यवसाय-व्यापार में उपार्जन अच्छा होगा। शत्रुओं-विरोधियों पर विजय मिलेगी। सद्वा-कार्य कम करें। पिता से कुछ लाभ होगा। जीविका-व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, परिष्कृत कला, इंजीनियरिंग, सम्पर्क अधिकारी का कार्य, न्यायिक सेवा, प्रबन्धन तथा भाषा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। रत्न, विलासिता-सामग्री, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, कपड़े, रबड़ तथा प्लास्टिक आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्य स्थान में अनुकूल परिवर्तन आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपको वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह तथा सहकर्मियों-सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन में प्रगति, आय में वृद्धि तथा लाभ और व्यापार का विस्तार होगा। आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी और साझेदारी में लाभ होगा। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और बड़ी दोनों यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे। आपको परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। भाषा, दवा, प्रबन्धन, इंजीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप कूटनीतिक और स्नेही हैं और आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। समाज सेवा में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की विरोधियों पर विजय और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। उन्हें आपकी सहायता की जरूरत हो सकती है। आपके जीवनसाथी को सुख, जमीन जायदाद में वृद्धि और कुछ परिवर्तन होगा। आपकी माता को साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि पिता की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और उनके साथ अचानक कोई घटना घटेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ और हानि और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या होगी जबकि बड़ों के आवास या व्यवसाय में परिवर्तन, यात्रा और व्यय होगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति और जीवन में प्रगति होगी। शुक्र की दशा में बच्चों से सुख, शिशु का जन्म, सफलता तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यवसाय में लाभ होगा। मंगल के कारण जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और सगे-संबंधियों से सहायता मिलेगी। शनि की

अन्तर्दशा में यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सफलता मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन-समृद्धि, यश तथा सफलता मिलेगी।



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

अंतर्दशा :- केतु - केतु
(20/10/2027 - 17/03/2028)

आपके लिए केतु महादशा 20/10/2027 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 20/10/2027 को प्रारंभ होकर 17/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसन्न होंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, लोकप्रियता बढ़ेगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। कार्यक्षेत्र में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। घरेलू जीवन सुखी रहेगा, माता से मधुर संबंध होंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, वाहन सुख हो सकता है। आपके बहुत से मित्र होंगे।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता प्रसन्न रहेंगे, उत्तम भोजन और साधन उपलब्ध होंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित घटना, यात्रा और परिवर्तन का संकेत है।

आपकी संतान लक्ष्य प्राप्त करेगी, शत्रुओं पर विजय होगी, मित्र सहयोग करेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहतों से उत्तम संबंध होंगे, स्वास्थ्य उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द की दाल, तिल और कंबल दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(17/03/2028 - 17/05/2029)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। किस्मत साथ देगी, लोकप्रियता बढ़ेगी। धनागम अच्छा होगा। धन संचित होगा, अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके बहुत से ज्ञानवान और प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी रहेंगे। कला में रुचि होगी। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। कार्यक्षेत्र में उच्चपद प्राप्त होगा, सम्मान मिलेगा।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली होंगे। आपके पिता को स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी; वे धनी बनेंगे, लघु यात्राएं होंगी। माता विरासत द्वारा अचल संपत्ति की मालिक बन सकती हैं; धनी बनेंगी। आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यात्रा, पिता से लाभकारी संबंध, धन-समृद्धि और प्रसन्नता का योग है। बड़े भाई-बहन उच्चपद प्राप्त करेंगे, प्रसिद्ध और

धनी बनेंगे।

आपकी संतान सफल रहेगी, उत्तम मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार से लाभ होगा, किस्मत साथ देगी, धनार्जन अच्छा होगा। अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को विविध माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

अंतर्दशा :- केतु - सूर्य
(17/05/2029 - 22/09/2029)

आपके लिए केतु महादशा 20/10/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 17/05/2029 को प्रारंभ होकर 22/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपको आसानी से सफलता मिल जाएगी। सरकार से लाभ हो सकता है। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता हो सकती है जो लाभकारी रहेगी। बड़े भाई-बहनों से उत्तम संबंध रहेंगे। निवेश से लाभ हो सकता है। सब सुख नसीब होंगे। आपकी संतान धनी बनेगी। आपकी शिक्षा उत्तम हो सकती है।

आपके जीवनसाथी सफल और धनी बनेंगे। आपके पिता की इच्छाएं पूर्ण होंगी, धनार्जन उत्तम होगा। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है, अचानक धन मिल सकता है।

आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, धन, अध्यात्म में रुचि और प्रसिद्धि का संकेत है। आपकी संतान धनी बनेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदार के माध्यम से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे, कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र
(22/09/2029 - 23/04/2030)

आपके लिए केतु महादशा 20/10/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 22/09/2029 से प्रारंभ होकर 23/04/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप दान-धर्म के काम करेंगे। समाजसेवी संस्था की स्थापना कर

सकते हैं। आपकी संतान सुखकारी होगी। दूरस्थ स्थान की लाभदायक यात्रा हो सकती है। घर में मेहमान आ सकते हैं। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। छोटे भाई-बहनों से उत्तम संबंध रहेंगे। कला, संगीत और साहित्य में सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी को संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। आपके पिता लोकप्रिय और समाज में सफल होंगे। माता के मार्ग में बाधाएं आ सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, उत्तम शिक्षा, बहुत से मित्र और धनी बनने का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और स्पर्धा में सफल रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो घरेलू जीवन सुखी रहेगा, धनी बनेंगे, निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; खर्च बढ़ेंगे। व्यापारियों को कुशल मार्केटिंग से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गठिया आदि व्याधि से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ॐ सौ सोमाय नमः